

रविवार 14 सितंबर, 2025

विषय — पदार्थ

स्वर्ण पाठः इफिसियों 2 : 8

" क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है। "

उत्तरदायी अध्ययनः फिलिप्पियों 3 : 13, 14, 16, 20
फिलिप्पियों 4 : 6-8, 20

- ¹³ हे भाइयों, मेरी भावना यह नहीं कि मैं पकड़ चुका हूँ: परन्तु केवल यह एक काम करता हूँ, कि जो बातें पीछे रह गई हैं उन को भूल कर, आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ।
- ¹⁴ निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूँ, ताकि वह इनाम पाऊँ, जिस के लिये परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है।
- ¹⁶ सो जहां तक हम पहुंचे हैं, उसी के अनुसार चलें॥
- ²⁰ पर हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है; और हम एक उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के वहां से आने ही बाट जोह रहे हैं।
- ⁶ किसी भी बात की चिन्ता मत करो: परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और बिनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख अपस्थित किए जाएं।
- ⁷ तब परमेश्वर की शान्ति, जो समझ से बिल्कुल परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरिक्षत रखेगी॥
- ⁸ निदान, हे भाइयों, जो जो बातें सत्य हैं, और जो जो बातें आदरणीय हैं, और जो जो बातें उचित हैं, और जो जो बातें पवित्र हैं, और जो जो बातें सुहावनी हैं, और जो जो बातें मनभावनी हैं, निदान, जो जो सदगुण और प्रशंसा की बातें हैं, उन्हीं पर ध्यान लगाया करो।
- ²⁰ हमारे परमेश्वर और पिता की महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन॥

पाठ उपदेश

बाइबल

1. मत्ती 26 : 19 (से:), 31 (से:), 33-35, 59, 60 (से:), 63-65 (से:), 66, 69-75

¹⁹ सो चेलों ने यीशु की आज्ञा मानी

³¹ तब यीशु ने उन से कहा; तुम सब आज ही रात को मेरे विषय में ठोकर खाओगे

- 33 इस पर पतरस ने उस से कहा, यदि सब तेरे विषय में ठोकर खाएं तो खाएं, परन्तु मैं कभी भी ठोकर न खाऊंगा।
- 34 यीशु ने उस से कहा, मैं तुम से सच कहता हूं, कि आज ही रात को मुर्गे के बांग देने से पहिले, तू तीन बार मुझ से मुकर जाएगा।
- 35 पतरस ने उस से कहा, यदि मुझे तेरे साथ मरना भी हो, तौभी, मैं तुझ से कभी न मुकरूंगा: और ऐसा ही सब चेलों ने भी कहा॥
- 59 महायाजक और सारी महासभा यीशु को मार डालने के लिये उसके विरोध में झूठी गवाही की खोज में थे।
- 60 परन्तु बहुत से झूठे गवाहों के आने पर भी न पाई।
- 63 मैं तुझे जीवते परमेश्वर की शपथ देता हूं, कि यदि तू परमेश्वर का पुत्र मसीह है, तो हम से कह दे।
- 64 यीशु ने उस से कहा; तू ने आप ही कह दिया: वरन मैं तुम से यह भी कहता हूं, कि अब से तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान की दाहिनी ओर बैठे, और आकाश के बादलों पर आते देखोगे।
- 65 तब महायाजक ने अपने वस्त्र फाड़कर कहा, इस ने परमेश्वर की निन्दा की है
- 66 तुम क्या समझते हो? उन्होंने उत्तर दिया, यह वध होने के योग्य है।
- 69 और पतरस बाहर आंगन में बैठा हुआ था: कि एक लौड़ी ने उसके पास आकर कहा; तू भी यीशु गलीली के साथ था।
- 70 उस ने सब के साम्हने यह कह कर इन्कार किया और कहा, मैं नहीं जानता तू क्या कह रही है।
- 71 जब वह बाहर डेवढ़ी में चला गया, तो दूसरी ने उसे देखकर उन से जो वहां थे कहा; यह भी तो यीशु नासरी के साथ था।
- 72 उस ने शपथ खाकर फिर इन्कार किया कि मैं उस मनुष्य को नहीं जानता।
- 73 थोड़ी देर के बाद, जो वहां खड़े थे, उन्होंने पतरस के पास आकर उस से कहा, सचमुच तू भी उन में से एक है; क्योंकि तेरी बोली तेरा भेद खोल देती है।
- 74 तब वह धिक्कार देने और शपथ खाने लगा, कि मैं उस मनुष्य को नहीं जानता; और तुरन्त मुर्ग ने बांग दी।
- 75 तब पतरस को यीशु की कही हुई बात स्मरण आई की मुर्ग के बांग देने से पहिले तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा और वह बाहर जाकर फूट फूट कर रोने लगा॥

2. 1 पतरस 1 : 1, 3, 4, 7, 23

- 1 पतरस की ओर से जो यीशु मसीह का प्रेरित है, उन परदेशियों के नाम, जो पुन्तुस, गलतिया, कप्पदुकिया, आसिया, और बिथुनिया में तित्तर बित्तर होकर रहते हैं।
- 3 हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद दो, जिस ने यीशु मसीह के हुआओं में से जी उठने के द्वारा, अपनी बड़ी दया से हमें जीवित आशा के लिये नया जन्म दिया।
- 4 अर्थात् एक अविनाशी और निर्मल, और अजर मीरास के लिये।
- 7 और यह इसलिये है कि तुम्हारा परखा हुआ विश्वास, जो आग से ताए हुए नाशमान सोने से भी कहीं, अधिक बहुमूल्य है, यीशु मसीह के प्रगट होने पर प्रशंसा, और महिमा, और आदर का कारण ठहरे।
- 23 क्योंकि तुम ने नाशमान नहीं पर अविनाशी बीज से परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरने वाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है।

3. प्रेस्तिों के काम 3 : 1-8

- ¹ पतरस और यूहन्ना तीसरे पहर प्रार्थना के समय मन्दिर में जा रहे थे।
- ² और लोग एक जन्म के लंगड़े को ला रहे थे, जिस को वे प्रति दिन मन्दिर के उस द्वार पर जो सुन्दर कहलाता है, बैठा देते थे, कि वह मन्दिर में जाने वालों से भीख मांगे।
- ³ जब उस ने पतरस और यूहन्ना को मन्दिर में जाते देखा, तो उन से भीख मांगी।
- ⁴ पतरस ने यूहन्ना के साथ उस की ओर ध्यान से देखकर कहा, हमारी ओर देख।
- ⁵ सो वह उन से कुछ पाने की आशा रखते हुए उन की ओर ताकने लगा।
- ⁶ तब पतरस ने कहा, चान्दी और सोना तो मेरे पास है नहीं; परन्तु जो मेरे पास है, वह तुझे देता हूं: यीशु मसीह नासरी के नाम से चल फिर।
- ⁷ और उस ने उसका दाहिना हाथ पकड़ के उसे उठाया: और तुरन्त उसके पावों और टखनों में बल आ गया।
- ⁸ और वह उछलकर खड़ा हो गया, और चलने फिरने लगा और चलता; और कूदता, और परमेश्वर की स्तुति करता हुआ उन के साथ मन्दिर में गया।

4. प्रेस्तिों के काम 4 : 1, 3 (से:), 7, 8, 10-12, 14, 21 (से:), 23, 24, 29, 30 (से:), 31, 32 (से:), 33, 34 (से:), 36 (से 1st), 37

- ¹ जब वे लोगों से यह कह रहे थे, तो याजक और मन्दिर के सरदार और सदूकी उन पर चढ़ आए।
- ³ और उन्होंने उन्हें पकड़कर
- ⁷ और उन्हें बीच में खड़ा करके पूछने लगे, कि तुम ने यह काम किस सामर्थ से और किस नाम से किया है?
- ⁸ तब पतरस ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर उन से कहा।
- ¹⁰ तो तुम सब और सारे इस्त्राएली लोग जान लें कि यीशु मसीह नासरी के नाम से जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, और परमेश्वर ने मरे हुआओं में से जिलाया, यह मनुष्य तुम्हारे साम्हने भला चंगा खड़ा है।
- ¹¹ यह वही पत्थर है जिसे तुम राजमिस्त्रियों ने तुच्छ जाना और वह कोने के सिरे का पत्थर हो गया।
- ¹² और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिस के द्वारा हम उद्धार पा सकें॥
- ¹⁴ और उस मनुष्य को जो अच्छा हुआ था, उन के साथ खड़े देखकर, वे विरोध में कुछ न कह सके।
- ²¹ तब उन्होंने उन को और धमका कर छोड़ दिया, क्योंकि लोगों के कारण उन्हें
- ²³ वे छूटकर अपने साथियों के पास आए, और जो कुछ महायाजकों और पुरनियों ने उन से कहा था, उन को सुना दिया।
- ²⁴ यह सुनकर, उन्होंने एक चित्त होकर ऊंचे शब्द से परमेश्वर से कहा, हे स्वामी, तू वही है जिस ने स्वर्ग और पृथ्वी और समुद्र और जो कुछ उन में है बनाया।
- ²⁹ अब, हे प्रभु, उन की धमकियों को देख; और अपने दासों को यह वरदान दे, कि तेरा वचन बड़े हियाव से सुनाएं।
- ³⁰ और चंगा करने के लिये तू अपना हाथ बढ़ा
- ³¹ जब वे प्रार्थना कर चुके, तो वह स्थान जहां वे इकट्ठे थे हिल गया, और वे सब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गए, और परमेश्वर का वचन हियाव से सुनाते रहे॥

- ³² और विश्वास करने वालों की मण्डली एक चित्त और एक मन थी।
³³ और प्रेरित बड़ी सामर्थ से प्रभु यीशु के जी उठने की गवाही देते रहे और उन सब पर बड़ा अनुग्रह था।
³⁴ और उन में कोई भी दरिद्र न था।
³⁶ और यूसुफ नाम
³⁷ उस की कुछ भूमि थी, जिसे उस ने बेचा, और दाम के रूपये लाकर प्रेरितों के पांवों पर रख दिए॥

5. इब्रानियों 11 : 1

- ¹ अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 468: 17 (पदार्थ)-21

पदार्थ वह है जो अनादि है और कलह और क्षय से असमर्थ है। सत्य, जीवन और प्रेम पदार्थ हैं, क्योंकि इब्रानियों में इस शब्द का उपयोग होता है: "विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है।"

2. 349: 31-5

क्रिश्चियन साइंस में, पदार्थ को आत्मा माना जाता है, जबकि क्रिश्चियन साइंस के विरोधी पदार्थ को पदार्थ मानते हैं। वे पदार्थ को कुछ और लगभग एकमात्र वस्तु मानते हैं, और जो चीजें आत्मा से संबंधित हैं उन्हें लगभग शून्य या दैनिक अनुभव से बहुत दूर मानते हैं। क्रिश्चियन साइंस बिल्कुल विपरीत दृष्टिकोण रखता है।

3. 136: 29-7

शिष्यों ने अपने गुरु को दूसरों की तुलना में बेहतर समझा; परन्तु जो कुछ उस ने कहा और किया, वे सब न समझ पाए, वा उस से बार-बार प्रश्न न करते। यीशु ने धीरज धरने की सच्चाई सिखाने और उसका प्रदर्शन करने में धीरज से काम लिया। उनके छात्रों ने देखा कि सत्य की यह शक्ति बीमारों को चंगा करती है, बुराई को निकालती है, मृतकों को उठाती है; लेकिन इस अद्भुत कार्य का परम आध्यात्मिक रूप से विवेकाधीन नहीं था, यहां तक कि उनके द्वारा, क्रूस पर चढ़ाने के बाद तक, जब उनका बेदाग शिक्षक उनके सामने खड़ा था, बीमारी, पाप, बीमारी, मृत्यु और कब्र पर विजेता।

4. 325: 30-2

जब किसी भी युग में पहली बार बोला गया, सत्य, प्रकाश की तरह, "अंधेरे में चमकता है, और अंधेरा उसे समझ नहीं पाता।" जीवन, पदार्थ और मन की झूठी भावना दिव्य संभावनाओं को छुपाती है, और वैज्ञानिक प्रदर्शन को छुपाती है।

5. 43: 3-12

यीशु के कार्य की विशालता, उनकी आँखों के सामने उनका भौतिक रूप से अदृश्य होना और उनका पुनः प्रकट होना, इन सबने शिष्यों को यीशु की कही हुई बात समझने में सक्षम बनाया। अब तक वे केवल विश्वास करते थे; अब वे समझ गए। इस समझ का आगमन ही पवित्र आत्मा के अवतरण का अर्थ है, - दिव्य विज्ञान का वह प्रवाह जिसने पेंटेकोस्टल दिवस को इतना प्रकाशित किया और अब अपने प्राचीन इतिहास को दोहरा रहा है।

का अंतिम प्रमाण सबसे अधिक, सबसे अधिक समझाने वाला, अपने छात्रों के लिए सबसे अधिक लाभदायक था।

6. 91: 16-21

भौतिक स्वार्थ में लीन हम विचार और प्रतिबिंबित करते हैं, लेकिन जीवन या मन के प्रति पदार्थ को फीका करते हैं। भौतिक स्वार्थ का खंडन, मनुष्य की आध्यात्मिक और शाश्वत व्यक्ति के विवेक को प्रभावित करता है, और पदार्थ से प्राप्त गलत ज्ञान को नष्ट कर देता है या जिसे भौतिक इंद्रियां कहा जाता है।

7. 326: 8-11, 20-21

करनी चाहिए। सभी प्रकृति मनुष्य को ईश्वर का प्यार सिखाती है, लेकिन मनुष्य ईश्वर से प्रेम नहीं कर सकता है और आध्यात्मिक चीजों पर अपना पूरा प्यार कायम कर सकता है, जबकि सामग्री से प्रेम कर सकता है या आध्यात्मिक से अधिक उस पर भरोसा कर सकता है।
सच्चे इरादों के साथ काम करने और प्रार्थना करने से, आपके पिता आपके लिए रास्ता खोलेंगे।

8. 179: 7-11

अमर मन उन चीजों को ठीक करता है जिन्हें आंखों ने नहीं देखा है; लेकिन विचारों को समझने और सत्य-शक्ति द्वारा उपचार करने की आध्यात्मिक क्षमता, केवल तभी प्राप्त होती है जब मनुष्य आत्म-धार्मिकता में नहीं, बल्कि दिव्य प्रकृति को प्रतिबिंबित करते हुए पाया जाता है।

9. 139: 15-27

चर्च काउंसिल के वोट के रूप में निर्णय के रूप में क्या किया जाना चाहिए और पवित्र लेखन नहीं माना जाना चाहिए; प्राचीन संस्करणों में प्रकट गलतियाँ; ओल्ड टेस्टामेंट में तीस हजार अलग-अलग रीडिंग, और न्यू में तीन सौ हजार, - इन तथ्यों से पता चलता है कि कैसे एक नश्वर और भौतिक अर्थ दैवीय रिकॉर्ड में चुराया गया था, अपने स्वयं के ह्यू के साथ कुछ हद तक प्रेरित पृष्ठों पर काला पड़ गया। लेकिन गलतियाँ न तो पूरी तरह से दिव्य विज्ञान को देख सकती हैं जो उत्पत्ति से प्रकाशित वाक्य में देखी गई शास्त्रों की विज्ञान, यीशु के प्रदर्शन से शादी करती हैं,

न ही भविष्यवक्ताओं द्वारा उपचार को रद्द करती हैं, जो कि भविष्यवाणी करते हैं "राजमिस्त्रियों ने जिस पत्थर को निकम्मा ठहराया" "वही कोने का सिरा हो गया।"

10. 78: 28-3

आत्मा मनुष्य को आशीर्वाद देती है, लेकिन मनुष्य यह नहीं बता सकता कि वह "कहां से आती है।" इसके द्वारा बीमार लोग चंगे हो जाते हैं, शोकित लोगों को शांति मिलती है, और पापियों का सुधार होता है। ये एक सार्वभौमिक ईश्वर के प्रभाव हैं, जो शाश्वत विज्ञान में निवास करने वाली अदृश्य अच्छाई है।

11. 278: 28-3

जिसे हम पाप, बीमारी और मृत्यु कहते हैं, वह नश्वर विश्वास है। हम सामग्री को त्रुटि के रूप में परिभाषित करते हैं, क्योंकि यह जीवन, पदार्थ और बुद्धि के विपरीत है। यदि आत्मा पर्याप्त और शाश्वत है, तो पदार्थ, उसकी मृत्यु दर के साथ, पर्याप्त नहीं हो सकता। हमारे लिए कौन सा पदार्थ होना चाहिए, — गलती से, बदलते हुए, परिवर्तनशील और नश्वर, या बेरोकटोक, अपरिवर्तनीय और अमर चीज़?

12. 329: 5 (थोड़ा सा खमीर)-13

थोड़ा सा लेवन पूरे गांठ को काट देता है। क्रिश्चियन साइंस की थोड़ी सी समझ इस बात का सच साबित करती है कि मैं इसके बारे में कहता हूं। चूंकि आप पानी पर चलकर मरे हुएों को ज़िंदा नहीं कर सकते, इसलिए आपको इन दिशाओं में ईश्वरीय विज्ञान की महान शक्ति पर सवाल उठाने का कोई अधिकार नहीं है। शुक्र मनाइए कि ईसा मसीह, जो विज्ञान के सच्चे प्रदर्शक थे, ने ये सब किया और हमारे लिए अपना आदर्श छोड़ा। विज्ञान में हम केवल वही प्रयोग कर सकते हैं जो हम समझते हैं। हमें अपने विश्वास को प्रदर्शन द्वारा सिद्ध करना होगा।

13. 275: 12-23

आत्मा, जीवन, सत्य, प्रेम, एक के रूप में गठबंधन, - और भगवान के लिए शास्त्र के नाम हैं। सभी पदार्थ, बुद्धि, ज्ञान, अस्तित्व, अमरता, कारण और प्रभाव ईश्वर के हैं। ये उनकी विशेषताएं हैं, अनंत दिव्य सिद्धांत, प्रेम की शाश्वत अभिव्यक्तियाँ। कोई भी ज्ञान बुद्धिमान नहीं है, लेकिन उसका ज्ञान है; कोई सत्य सत्य नहीं है, कोई प्रेम प्यारा नहीं है, कोई जीवन जीवन नहीं है, लेकिन परमात्मा है; कोई अच्छा नहीं है, लेकिन अच्छा भगवान सबसे अच्छा है।

दिव्य तत्वमीमांसा, जैसा कि आध्यात्मिक समझ से पता चलता है, स्पष्ट रूप से दिखाता है कि सभी मन है, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी, सर्वज्ञ, - अर्थात्, सभी शक्ति, सभी उपस्थिति, सभी विज्ञान।

14. 468: 21-24

आत्मा, मन, आत्मा या ईश्वर का पर्यायवाची एकमात्र वास्तविक पदार्थ है। व्यक्ति सहित आध्यात्मिक ब्रह्मांड, एक यौगिक विचार है, वह आत्मा के दिव्य पदार्थ को दर्शाता है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6